

दीनदयालजी के व्यक्तित्व में समायी महानता का आभास पाना कठिन था। संघ कार्य आरम्भ करने जब वे आगरा में थे। एक दिन सब्जी लेने मित्र नानाजी के साथ बाजार गए।

